साईं सृजन पटल

मासिक पत्रिका

लेखन और सृजन के उन्नयन के लिए सदैव प्रतिबद्ध

वर्ष-2 | अंक-9 | अप्रैल 2025 | पृष्ठ-20 | निःशुल्क

सम्पादकीय

'साई सृजन पटल' का नौवां अंक सुधी पाठकों की नजर है। पत्रिका की लेखकीय और संपादकीय टीम के अपार सहयोग से यह सफर यहां तक तय हो पाया है। प्रयास रहा है कि अपने पाठकों तक प्रमुख सृजनात्मक उपलब्धियों को सचित्र और तथ्यात्मक रूप में पहुंचाया जाये। प्रस्तुत अंक की शुरुआत उत्तराखंड की संस्कृति 'मांगल गीत' से हुई है। पर्यटन से जुड़े लेखों कर्णप्रयाग नगर,मथोली होम स्टे और रिवर राफ्टिंग को सम्मिलित किया गया है। प्राकृतिक संपदा 'भीमल' और 'बटरफ्लाई गैलरी' भी इस अंक का हिस्सा बने हैं। लेखक गांव में 'भारतीय भाषाओं की स्मृति और समृद्धि' एवं माधव सेवा विश्राम सदन की जानकारी भी साझा की गई है। सफलता की कहानी के रूप में काजल सिंह के संघर्ष से परिचय कराया गया है। चलती-फिरती प्रयोगशाला 'लैब ऑन व्हील्स' को एक नवाचार के रूप में देखा जाना चाहिए। रंगमंच कार्यशाला के साथ ही खेल प्रतिभाओं को सम्मान दिया गया है। चकराता-पुरोड़ी में संविधान निर्माता बाबा साहेब डा.भीमराव अंबेडकर जी की प्रतिमा की स्थापना के रूप में एक विशेष कार्य हुआ है। कथाकार सुभाष पंत जी का निधन साहित्य जगत की अपूर्णनीय क्षति है। प्राकृतिक संपदा को संरक्षित और सुरक्षित रखने के लिए 'वनाग्नि' को रोकना सामूहिक दायित्व है। मई के प्रथम सप्ताह में पत्रिका के सभी अंक अपनी वेबसाइट पर भी उपलब्ध रहेंगे। पाठकों से मिल रहा उत्साहवर्धन नित नई ऊर्जा का संचार कर रहा है।

आपका- डा.के.एल.तलवाड़

केंद्रीय पेट्रोरसायन अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान
सिपेट : सेन्टर फॉर स्किलिंग एण्ड टेक्निकल सपोर्ट (सी एस टी एस)
रसायन एवं पेट्रोरसायन विभाग,
रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय, भारत सरकार
हरिद्वार रोड, पोस्ट-भानियावाला, डोईवाला
देहरादून-248140 (उत्तराखण्ड)
फोन : + 91-135-2695075
ई-मेल : dehradun@cipet.gov.in
वेबसाइट : www.cipet.gov.in
मुख्यालय : सिपेट, गिंडी, चेन्नई- 600 032

सिपेट CIPET

CENTRAL INSTITUTE OF PETROCHEMICALS ENGINEERING & TECHNOLOGY
CIPET : CENTRE FOR SKILLING AND TECHNICAL SUPPORT (CSTS)
Department of Chemicals & Petrochemicals
Ministry of Chemicals & Fertilizers, Govt. of India
Haridwar Road, Post - Bhaniyawala, Doiwala
Dehradun - 248140(Uttarakhand)
Phone : +91-135-2695075
E-mail : dehradun@cipet.gov.in
Website : www.cipet.gov.in
Head Office : CIPET, Guindy, Chennai - 600 032

पत्रांक सं. सिपेट_ दे.दून/अप्रैल_पत्रिका/2025-26/146 दिनांक: 23.04.2025

डॉ. पी.सी.पाढ़ी
निदेशक, सिपेट: सी.एस.टी.एस, देहरादून

संदेश

महोदय,

यह अत्यंत हर्ष का विषय है, कि **"साईं सृजन पटल"** मासिक पत्रिका के नौवें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। उक्त पत्रिका के माध्यम से देवभूमि उत्तराखंड की लोक संस्कृति, धार्मिक पर्यटन स्थल कलाकारों, साहित्यकारों, नवोदित लेखकों, कला, उद्योग, देश सेवा इत्यादि क्षेत्रों में राज्य की उभरती प्रतिभाओं का समायोजन कर उन्हें समाज के सामने रखने तथा पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण कदम साबित होगा।

इस पत्रिका के माध्यम से युवा पीढ़ी को अपनी संस्कृति, विरासत इत्यादि को जानने का अवसर प्राप्त होगा। सिपेट संस्थान पॉलीमर टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में राज्य के सरकारी, गैर सरकारी एवं पी.एस.यू. संस्थानों को तकनीकी सहयोग सेवाएं प्रदान कर प्लास्टिक उद्योगों में उत्तराखंड राज्य को अग्रणी स्थान दिलाने में प्रयास कर रहा है, इसके साथ ही सिपेट राज्य के अल्पशिक्षित बेरोजगार छात्र-छात्राओं को निःशुल्क आवासीय रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण प्रदान कर रोजगार के अवसर प्रदान कर रहा है जिससे उनकी आजीविका संचालन की दिशा में प्रयास सफल हो सके और पलायन को रोका जा सके। साथ ही संस्थान छात्रों को पर्यावरण के प्रति सजग करके खेलकूद एवं सांस्कृतिक मंच प्रदान कर उनके व्यक्तित्व निर्माण के लिए भी कार्य कर रहा है।

हम, सिपेट परिवार की तरफ से **"साईं सृजन पटल"** मासिक पत्रिका के नौवें अंक के प्रकाशन के लिए सभी सम्मानित संपादक एवं सदस्यों को शुभकामनाएं देते हैं।

पी.सी.पाढ़ी
डॉ. पी.सी.पाढ़ी

केन्द्र : अहमदाबाद, अमृतसर , औरंगाबाद, अगरतला, बद्दी, बालासोर, बेंगलूरु, भोपाल, भुवनेश्वर, चंद्रपुर, चेन्नई, देहरादून, गुरुग्राम, गुवाहाटी, ग्वालियर, हैदराबाद, हाजीपुर, हल्दिया, ईम्फाल, जयपुर, कोच्चि, कोरबा, लखनऊ, मदुरै, मुरथल, मैसूरु, रायपुर, रांची वलसाड एवं विजयवाड़ा
Centres : Ahemdabad, Amritsar, Aurangabad, Agartala, Baddi, Balasore, Bengaluru, Bhopal, Bhubneswar, Chandrapur, Chennai, Dehradun, Gurugram, Guwahati, Gwalior, Hyderabad, Hajipur, Haldia, Imphal, jaipur, Kochi, Korba, Lucknow, Madurai, Murthal, Mysuru, Raipur, Ranchi, Valsad & Vijaywada

साईं सृजन पटल
मासिक पत्रिका

संपादक/स्वामी/प्रकाशक
प्रो.के.एल.तलवाड़
(सेवा निवृत्त प्राचार्य)
मो.- 9412142822
ई-मेल: sainsrijanpatal@gmail.com
वेबसाइट -sainsrijanpatal.com

उप संपादक
अंकित तिवारी
एम.ए. एल.एल.बी.
मो. 7678117638

सह संपादक
अमन तलवाड़
मो. 7300883189

द्वारा ईजी ग्राफिक्स,
दया पैलेस, हरिद्वार रोड,देहरादून (उत्तराखंड)
से मुद्रित करवाकर 'साईं कुटीर'
आर.के.पुरम, जोगीवाला, देहरादून
(उत्तराखंड) से प्रकाशित

सलाहकार मंडल
डा.एस.डी. जोशी, वरिष्ठ फिजिशियन
प्रो. जानकी पंवार (सेवानिवृत्त प्राचार्य)
डा. मंजू कोगियाल, असि. प्रो. हिन्दी
डा. चन्द्रभूषण बिजल्वाण साहित्यकार

आवरण पृष्ठ
पृष्ठभूमि- कर्णप्रयाग, इनसेट - चकराता में डा.भीमराव अंबेडकर जी की प्रतिमा, मथोली गांव होम स्टे की महिला,मांगलिक कार्यक्रम-रुद्रप्रयाग में शानवी भट्ट व विमोचन डा.कमलेश भारती

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में तथ्यों संबंधी विचार लेखकों के निजी हैं, जिनसे प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

मांगल गीत : उत्तराखंड की संस्कृति की विशिष्ट पहचान

उत्तराखंड के गढ़वाल और कुमाऊँ के पर्वतीय क्षेत्रों में विभिन्न शुभ संस्कारों के अवसर पर गाये जाने वाले मांगलिक गीत जिन्हें मांगल गीत कहा जाता है,यहां की सांस्कृतिक धरोहर हैं। उत्तराखंड हमेशा से सांस्कृतिक,धार्मिक और सामाजिक परंपराओं की वजह से देश–विदेश में अपनी अलग पहचान रखता है। मांगल गीत एक महत्वपूर्ण और शुभ लोक परंपरा है जो उत्तराखंड के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को दर्शाती है। अपने गीतों के माध्यम से मांगल विवाह की रस्मों को समृद्ध करता है और वर–वधु व परिवार को आशीर्वाद और सौभाग्य प्रदान करता है। एक जीवंत परंपरा के रूप में मांगल उत्तराखंड के लोगों को उनकी जड़ों से जोड़ता है। यह सुनिश्चित करता है कि उनकी परंपराओं की पवित्र और आनंदमयी भावना आने वाली पीढ़ियों तक बनी रहे। मांगल एक सर्वोत्कृष्ट लोकगीत है जो उत्तराखंड की सांस्कृतिक समृद्धि को दर्शाता है। मांगल गीतों की मधुर लयबद्ध धुनें और आकर्षक बोल आशीर्वाद प्राप्त करने व उत्सव की भावना से संबद्ध होती हैं।

शादी–ब्याह के अवसर पर गाये जाने वाले मांगल गीत–

- औ बैठ कागा हरिया बिरीछ,बोल–बोल कागा,चौदिसि सगुन,बिचारा बरमा जी,बेद पढ़ला, सगुनी कागा सगुन बोल..
- दे धावा,दे धावा मेरा ब्रह्मा जी,दे धावा, हल्दी का बेन हे। जिया रेयां,जिया रेंया ब्रह्मा जी, जौन दीनि हल्दी का बान हे..
- दे धावा बाबा जी, दे धावा बाबा जी,कन्या कु दान........ हीरा दान,मोती दान सब को ही देला,को भग्यान देलो कन्या कु दान हे..
- काला डाण्डा पार बाबा काली चादर कुयेडी। यखुली–यखुली लगदी मे डर। काला डाण्डा पार बाबा। पैली धोलो लाड़ी त्वे सकिल जनित। तब धोलो लाड़ी त्वे हाथी अर घोड़ा। यखुली नि भेजलो।

मांगल निर्विवाद रूप से उत्तराखंड के संगीत की आत्मा है,लेकिन आधुनिकता की दौड़ में आज की नई पीढ़ी अपनी स्वस्थ परंपराओं से विमुख होती दिख रही है। शादी–ब्याह, नामकरण, मुंडन, जन्मदिन और अन्य मांगलिक अवसरों पर डीजे का शोर भारी पड़ता जा रहा है।

प्रस्तुति:
डा.रमेश चन्द्र भट्ट,विभागाध्यक्ष भूगोल,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
कर्णप्रयाग।

पहाड़ों पर बहुउपयोगी 'भीमल'

भीमल पहाड़ों पर उगने वाला एक सदाबहार पौधा है जिसे स्थानीय गढ़वाली भाषा में भ्यूंल, भिकोंल या कहीं– कहीं स्योलू भी कहा जाता है। साधारणतः आठ से चौदह मीटर लम्बा यह पौधा पहाड़ी सीढ़ीनुमा खेतों की मेंढ़ या बीठे (दो खेतों के बीच का स्थान) पर उगाये जाते है जिसका बानस्पतिक नाम ग्रीविया ऑक्टिवा है। यूं तो भीमल को पहाड़ों पर सामान्य रूप में पशुओं के चारे के लिए जाना जाता है परन्तु प्राकृतिक गुणों से भरपूर यह पेड़ पहाड़ों की कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना जाता है। पशुओं के चारे के अलावा यह भीमल रेशेदार होने के कारण रस्सियां बनाने, आग जलाने के लिए उचित लकड़ी, लकड़ी के कृषि यन्त्र बनाने, प्राकृतिक शेम्पू बनाने, छड़ी व बेंत बनाने, इसका फल खाने, संस्कृति का परिचायक दीपावली पर भैला बनाने आदि में भीमल का प्रयोग किया जाता है।

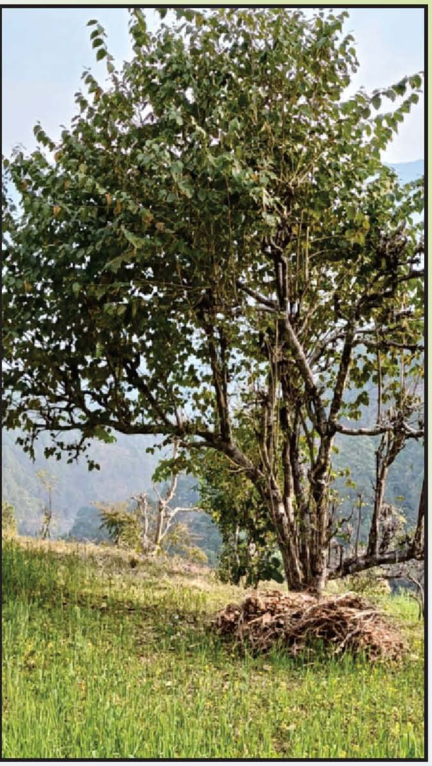

भीमल को पहाड़ों पर पशुओं के चारे के लिए सर्वोत्तम माना जाता है। इसको खाने से पशुओं में दूध की मात्रा तथा गुणवत्ता दोनों बढ़ जाती है। साधारणतः भीमल को पशुओं को तब खिलाया जाता है जब भैंस या गाय से दूध निकाला जाता है। पहाड़ों पर इस समय खिलायी जाने वाली घास को दुलोंण या पनोंण कहा जाता है। चमोली जनपद में रिठोली गांव में दूध का व्यापार करने वाली रूक्मणी देवी कहती हैं कि गाय, भैंस के चारे में भीमल के पत्तों से दूध मीठा और गाढ़ा हो जाता है साथ ही दूध की मात्रा भी बढ़ जाती है।

भीमल की रेशेदार टहनियों से रस्सियां भी बनाई जाती हैं। इसकी टहनियों से चारे की पत्तियां निकालकर इन्हें दो या तीन महीने तक धूप में सुखाया जाता है फिर सूखी टहनियों के इन गट्ठरों को गर्मियों के समय तालाब या गधेरे में एक या डेढ़ महीने तक पत्थरों से पानी के अन्दर डुबोकर रखा जाता है। पानी में होने के कारण इनकी बाहरी परत मुलायम होकर निकल जाती है फिर इन्हें बाहर निकालकर पत्थर पर थपेड़े देकर परत को पूरी तरह से साफ किया जाता है अब टहनी पर हल्के सफेद रंग की छाल बच जाती है। इस छाल को गढ़वाली भाषा में "स्योलू" कहा जाता है। टहनियों से स्योलू निकालकर इन्हें गुच्छा (क्वीला) बनाकर सुरक्षित रखा जाता है तथा समय–समय पर इस स्योलू से घास लाने के लिये जूड़े (विशेष रस्सी), दांवे (पशुओं को खूंटे से बांधने की रस्सी), कंडी के केंणें, मुस्के या म्वाले (बैलों के मुंह पर हल जोतते समय पहनने वाले), चटाई, कमरे के अन्दर की चप्पलें, थैले आदि बनाये जाते हैं।

भीमल की टहनियों से जब बाहर की छाल (स्योलू) को निकाल दिया जाता है तो अन्दर की सफेद टहनी बच जाती है जिन्हें "क्यड़ा" या "चिल्ले" कहा जाता है। ये टहनियां आग बहुत तेजी के साथ पकड़ती हैं। पहाड़ो पर इन टहनियों को गट्ठर बनाकर घरों में सुरक्षित रख दिया जाता है और समय–समय पर चूल्हों में ये आग जलाने के काम आती हैं। पुराने समय में जब गैस चूल्हे नहीं थे और दियासलाई भी दूरस्थ गांवों में बहुत कम मात्रा में पहुंचती थी तो यही सूखे क्यड़े (टहनियां) एक घर से दूसरे घर में आग पहुंचाने का कार्य करते थे अर्थात ये सामाजिक

सुदृढ़ता के प्रतीक भी थे। जब घरों में बिजली की पहुंच नहीं थी तब इन क्यड़ों को जलाकर लोग घरों में उजाला करते थे साथ ही दशहरे के समय रात में होने वाली रामलीला देखने के लिए लोग जब एक गांव से दूसरे गांव में जाते थे, तब उजाले के लिए इन्हीं का प्रयोग करते थे। सितम्बर–अक्टूबर में धान की मंडाई जब लोग रात को करते थे तब इन्हीं क्यड़ों को उजाले के लिए प्रयोग करते थे। इस प्रकार ये भीमल की टहनियां पहाड़ों पर संस्कृति और अर्थव्यवस्था के संवाहक का कार्य भी करती हैं। उत्तराखण्ड की अर्थव्यवस्था को "मनीआर्डर" अर्थव्यवस्था कहा जाता है परन्तु यहां के सीढ़ीनुमा छोटे–छोटे खेतों पर आज भी अधिकांश जनसंख्या अपना जीवन निर्वाह कर रही है। इन खेतों पर ट्रेक्टर से खेती करना सम्भव नहीं है, इसलिए आज भी बैल जोतकर यहां खेती की जाती है। भीमल की लकड़ी मजबूत और लचीली होने के कारण इससे अनेक कृषि काष्ट उपकरण बनाये जाते हैं। हल की हरीस (लाट), ज्यू आदि के लिए भीमल को उपयुक्त माना जाता है। इसके अलावा रस्सी बनाने के लिए अटाला (छोटी लकड़ी की टहनियां), पशुओं को बांधने के लिए खूंटे (किल्ले) आदि भीमल के ही मजबूत माने जाते हैं। इसकी छाल इतनी फिसलनभरी होती है कि यदि इसकी कच्ची छाल पानी के साथ खुरच दी जाय तो यह मछलियों की तरह फिसल जाती है। पहाड़ी क्षेत्र में इसकी फिसलन जैसे उदाहरण दोहरे चरित्र वाले व्यक्ति के लिए भी औखाणं के रूप में प्रयुक्त किया जाता है कि वह व्यक्ति "भ्यूले कील" है अर्थात कभी भी अपनी बात से फिसल सकता है।

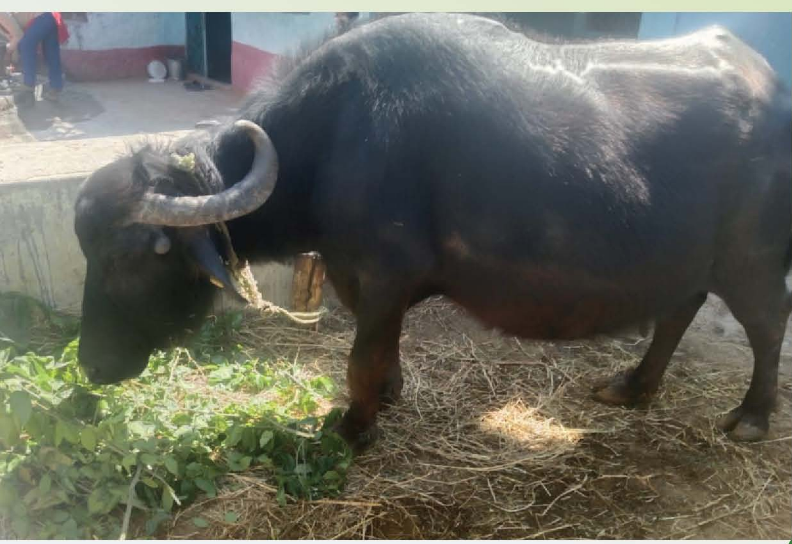

भीमल का एक और उपयोग यह है कि इससे प्राकृतिक शेम्पू भी प्राप्त किया जाता है। यदि इसकी कच्ची टहनियों की छाल पानी के साथ प्रयोग की जाती है, तो चिपचिपा झाग तैयार हो जाता है। चमोली जनपद में दिगोली गांव की मन्जू पुरोहित बताती हैं कि सत्तर अस्सी के दशक में जब साबुन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध नहीं थे तो हम लोग भीमल की टहनियों से छाल निकाल लेते थे तथा उन्हें अच्छी तरह से ओखली में कूट लेते थे और फिर सिर के बालों को उसे से धोया करते थे। इस प्राकृतिक शेम्पू से बाल एकदम साफ और मुलायम हो जाते थे। वर्तमान में कई कम्पनियां इससे शेम्पू उत्पाद तैयार कर बाजार में बेच रहे हैं। उत्तराखण्ड के पहाड़ी क्षेत्र में दीपावली पर खेले जाने वाले "भैला" (जलती आग को हाथों से घुमाना) से सभी परिचित हैं। इस भैला में भी भीमल का प्रयोग किया जाता है। स्योलू निकालकर भीमल की इन सफेद टहनियों (क्यड़ा) की गठरी को भीमल की ही कच्ची छाल से मजबूती से बांधा जाता है जब इसमें आग लगाई जाती है तो सूखी टहनियां तो आसानी से जल जाती हैं परन्तु कच्ची छाल नहीं जलती इसलिए इसे आसानी से देर तक घुमाया जा सकता है। बचपन में हम जब गांव में इन "भैला" को घुमाते थे तब भीमल की यह कच्ची छाल की रस्सी ही भैला को देर तक आग की लपटों के साथ आसानी से घुमाती थी।

भीमल की टहनियां लचीली होने के कारण उन्हें जिस स्वरूप में सुखाया जाता है वह उसी स्वरूप में ढल जाती है इस कारण लकड़ी के यदि घुमावदार काष्ट उपकरण बनाने हों तो भीमल का प्रयोग किया जाता है। रामलीला में धनुष–बाण भीमल के ही बनते हैं। बेंत, छड़ी आदि इसी भीमल की टहनियों से बनती हैं। बचपन में हमारे मास्टर जी की छड़ी इसी भीमल की टहनी की बनी होती थी। इसके अलावा पहाड़ों पर हर शुभ कार्य में बजने वाले ढोल–दमाऊं को बजाने वाली डण्डियां अधिकांशतः इसी भीमल की बनी होती हैं। अक्टूबर–नवम्बर में जब भीमल के छोटे–छोटे मीठे कसैले फल पक जाते हैं तो पकने के बाद इनका रंग काला हो जाता है। इन फलों को खाकर जीभ पान जैसे रंग की हो जाती है तब बच्चे इसे पहाड़ी पान के रूप में भी प्रयुक्त करते थे।

इस प्रकार पहाड़ों पर पाया जाने वाला यह बहुउपयोगी भीमल का पौधा उत्तराखण्ड में कृषि, अर्थव्यवस्था और संस्कृति का परिचायक है। हमें इसका संरक्षण कर इसकी महत्ता को बनाये रखना चाहिए।

प्रस्तुति–
कीर्तिराम डंगवाल
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान
डॉ. शिवानन्द नौटियाल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्णप्रयाग

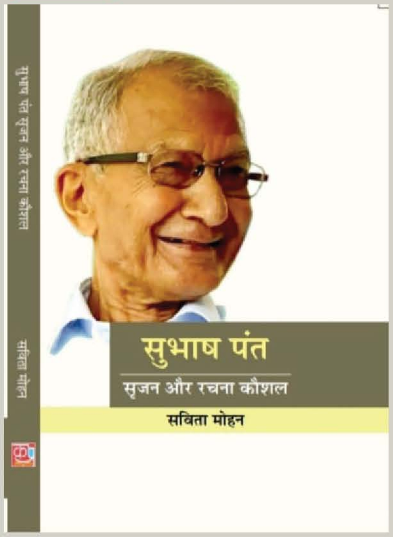

कथाकार सुभाष पंत का जाना एक युग का अंत

उतराखंड के प्रसिद्ध कहानीकार और भाषा संस्थान के सर्वोच्च सम्मान साहित्य भूषण से सम्मानित सुभाष पंत जी ने 7 अप्रैल की सुबह देहरादून स्थित अपने आवास पर अंतिम सांस ली। 86 वर्षीय सुभाष पंत हिन्दी कथा साहित्य के महान शिल्पी और बीते दौर के समय को कहानियों में प्रामाणिकता से दर्ज करने वाले कथाकार का जाना एक युग का अंत है। उनकी पहली कहानी 'गाय का दूध' वर्ष 1973 में सारिका पत्रिका के विशेषांक में प्रकाशित हुई थी,जो सर्वाधिक उल्लेखनीय कहानी घोषित हुई, जिसे अंग्रेजी सहित अनेक भाषाओं में अनुदित किया गया। उनकी कहानियां हमेशा सामाजिक सरोकारों से जुड़ी रही हैं। एक रात का फासला,छोटा होता हुआ आदमी,एक का पहाड़ा,पहाड़ की सुबह,मुन्नी बाई की प्रार्थना,पहाड़ चोर, सुबह का भूला,इक्कीसवीं सदी की एक दिलचस्प दौड़ और सिंगिंग बेल आदि उनकी उल्लेखनीय कृतियां हैं। वे कहानी,उपन्यास और नाटक लेखन के अद्भुत शिल्पी थे। सुभाष पंत उत्तराखंड आंदोलन को स्कूली पाठ्यक्रम में सम्मिलित किए जाने के पक्षधर थे। वरिष्ठ साहित्यकार डा.सविता मोहन की पुस्तक 'सुभाष पंत–सृजन और रचना कौशल' उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का समग्र दर्पण है। साईं सृजन पटल की ओर से महान कथाकार को भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

मेरे पहाड़ की औरत

कभी पहाड़ों पर चढ़ती
कभी आपदा से लड़ती
जिंदगी की कशमकश से उलझती– उलझती
बढ़ जाती है ......पहाड़ की औरत

लिखती है कविता , कहानियाँ और लेख
साहित्य के सृजन में लिप्त
एक धुरी पर घूमते घूमते
लक्ष्य को पा लेती है......पहाड़ की औरत

कभी ऐपण के रँग बिखेरती
कभी मंगल गाती कभी पकवानों में उलझी
कभी ढोलक की थाप देती
बढ़ जाती है......पहाड़ की औरत

पीड़ा के दंश झेलती
घर परिवार और बच्चों के बीच
जमीन से आसमान छूँ लेती हो तुम
..............मेरे पहाड़ की औरत
ऐसे ही सशक्तिकरण की मिसाल बन जाती हो तुम
मेरे ......पहाड़ की औरत

आर्टिस्ट अंजलि थापा की तूलिका से बनी पेंटिंग

प्रस्तुति
डॉ. विनीता चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर,
डी.डब्लू.टी.कॉलेज, देहरादून

राजकीय महाविद्यालय रुद्रप्रयाग

रिवर राफ्टिंग : साहसिक पर्यटन की दिशा में नया आयाम

देवभूमि उत्तराखंड में धार्मिक पर्यटन के अलावा साहसिक पर्यटन की अनेक गतिविधियां संचालित होती हैं।इनमें प्रमुख हैं– ट्रेकिंग, रिवर राफ्टिंग, बंजी जंपिग,पैरा ग्लाइडिंग, रॉक क्लाइंबिंग और माउंटेन बाइकिंग। इन गतिविधियों में प्रतिभाग करने वाले युवा जहां एक ओर रोमांच का अनुभव करते हैं,वहीं आगे चलकर यह उनके लिए स्वरोजगार का जरिया भी बन सकता है।राजकीय महाविद्यालय रुद्रप्रयाग के पर्यटन प्रबंधन व बीबीए के 24 छात्रों का 5 दिवसीय (24 से 29 मार्च 2025) राफ्टिंग कोर्स उच्च गुणवत्ता के साथ संपन्न हुआ।महाविद्यालय के पर्यटन प्रबंधन के छात्रों के लिए पाँच दिवसीय राफ्टिंग कोर्स एक रोमांचक और कौशल–वर्धक अनुभव था, जिसे पर्यटन मंत्रालय, उत्तराखंड सरकार द्वारा प्रायोजित किया गया था और पर्यटन विभाग, रुद्रप्रयाग द्वारा संचालित किया गया था। पाठ्यक्रम का उद्देश्य नदी–आधारित पर्यटन की गहरी समझ को बढ़ावा देते हुए व्यावहारिक साहसिक प्रशिक्षण प्रदान करना था। अलकनंदा नदी पर आयोजित इस कार्यक्रम में नदी सुरक्षा, राफ्टिंग तकनीक और टिकाऊ साहसिक पर्यटन पर सैद्धांतिक सत्र शामिल थे, साथ ही व्हाइट–वाटर राफ्टिंग का व्यावहारिक प्रदर्शन भी किया गया।विशेषज्ञ प्रशिक्षकों के मार्गदर्शन में, छात्रों ने आवश्यक पैडलिंग कौशल, नदी नेविगेशन, बचाव अभियान और जोखिम प्रबंधन सीखा। कार्यक्रम में पर्यावरण के अनुकूल पर्यटन प्रथाओं पर भी जोर दिया गया, जिससे न्यूनतम पर्यावरणीय प्रभाव सुनिश्चित हुआ। छात्रों ने उत्साहपूर्वक विभिन्न अभ्यासों में भाग लिया, जिससे साहसिक पर्यटन पेशेवरों के लिए आत्मविश्वास और टीम वर्क का अनुभव प्राप्त हुआ।

इस पहल ने न केवल उनके व्यावहारिक ज्ञान को मजबूत किया, बल्कि कई लोगों को साहसिक पर्यटन में करियर बनाने के लिए प्रेरित किया, जिससे उत्तराखंड को राफ्टिंग और आउटडोर रोमांच के लिए एक प्रमुख गंतव्य के रूप में बढ़ावा मिला। महाविद्यालय के प्राचार्य डा. आशुतोष त्रिपाठी का मानना है कि यह प्रशिक्षण साहसिक पर्यटन की दिशा में एक नया आयाम है जो विद्यार्थियों के भविष्य में स्वरोजगार के द्वार खोलेगा। महाविद्यालय के असिस्टेंट प्रोफेसर डा. विक्रम वीर भारती ने विद्यार्थियों के पथ प्रदर्शक के रूप में सराहनीय पहल की है।

प्रस्तुति–प्रो.(डॉ.) के.एल.तलवाड़

यूकॉस्टः उत्तराखंड राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद

लैब ऑन व्हील्स

विज्ञान शिक्षण में प्रयोगशाला का अत्यधिक महत्व होता है क्योंकि यह विद्यार्थियों को वैज्ञानिक सिद्धांतों को समझने और याद रखने में सहायक होती है। प्रयोगशाला में छात्रों को व्यावहारिक अनुभव मिलता है और वे वैज्ञानिकों की तरह प्रयोग कर सकते हैं। दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में प्रयोगशाला के अभाव की स्थिति में उनकी पढ़ाई सिर्फ किताबी ही रहती है। राज्य सरकार की मोबाइल साईंस लैब परियोजना के माध्यम दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में विज्ञान को लोकप्रिय बनाने और विज्ञान संचार गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए यह पहल की गई है।

यूकॉस्ट द्वारा संचालित इस योजना के प्रथम चरण में चंपावत, अल्मोड़ा,देहरादून और पौड़ी जनपद में सफलता के बाद 8 अप्रैल को मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने द्वितीय चरण का शुभारंभ किया।

मुख्यमंत्री ने देहरादून स्थित अपने कैंप कार्यालय से उत्तरकाशी, टिहरी,चमोली, रुद्रप्रयाग, हरिद्वार, उधमसिंह नगर,नैनीताल, बागेश्वर और पिथौरागढ जनपदों के लिए मोबाइल साइंस लैब को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस दौरान मुख्यमंत्री ने विज्ञान माडलों को प्रदर्शित कर रहे विभिन्न राजकीय इंटर कॉलेज के छात्र–छात्राओं के साथ संवाद भी किया और परियोजना से हो रहे लाभों की जानकारी भी ली। यूकॉस्ट के महानिदेशक प्रो.दुर्गेश पंत ने बताया कि राज्य सरकार की महत्वाकांक्षी इस परियोजना 'लैब ऑन व्हील्स' के अंतर्गत कक्षा 6 से 10 तक के छात्र–छात्राओं को प्रयोगशाला,प्रदर्शनी, मॉडल, विज्ञान गतिविधियों के द्वारा जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिकी,गणित आदि विषयों के पाठ्यक्रम को और बेहतर तरीके से सीखने और समझने का अवसर मिलेगा।

इस अवसर पर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सचिव नितेश झा, साईंस सिटी सलाहकार जी.एस.रौतेला व यूकॉस्ट के संयुक्त निदेशक डा.डी.पी.उनियाल आदि मौजूद रहे।

प्रस्तुति–इंजी. जितेंद्र कुमार,
वैज्ञानिक अधिकारी,यूकॉस्ट,
देहरादून

मथोली गांव : आतिथ्य सत्कार से बना पर्यटकों का नया ठिकाना

देवभूमि उत्तराखंड अपने धार्मिक महत्व और प्राकृतिक सौंदर्य के लिए विश्व विख्यात है। धार्मिक पर्यटन के साथ–साथ समानांतर पर्यटन की अपार संभावनाएं भी यहां विद्यमान हैं। इसी के चलते यहां 'होम स्टे' का विस्तार हो रहा है। इस योजना का उद्देश्य न केवल पर्यटन को प्रोत्साहन देना है,बल्कि स्थानीय लोगों को आर्थिक लाभ भी पहुंचाना है। उत्तरकाशी जनपद में पर्यटकों का रुख आमतौर पर हर्षिल वैली या मोरी– सांकरी की तरफ ही होता है। ऐसे में चिन्यालीसौड़ ब्लॉक के मथोली गांव की महिलाओं ने अपने आतिथ्य सत्कार और कौशल से गांव को पर्यटकों के लिए नया ठिकाना बना दिया है। यहां होम स्टे संचालन से लेकर विलेज टूर तक महिलाएं ही संचालित करवा रही हैं।मथोली को पहाड़ के आम गांव से पर्यटक गांव के रूप में बदलने का श्रेय जाता है गांव के युवक प्रदीप पंवार को। प्रदीप पंवार को कोविड 19 लॉकडाउन के दौरान अपने गांव लौटना पड़ा, सौभाग्य से उनके पास पर्यटन क्षेत्र में काम करने का अनुभव था। इसलिए उन्होंने गांव के पास मौजूद अपनी छानी (गौशाला) को होम स्टे में बदल कर, इसे पर्यटकों के लिए खोल दिया। इसी के साथ प्रदीप पंवार ने गांव की महिलाओं को ही होम स्टे संचालन (आतिथ्य सत्कार, भोजन बनाने, ट्रैकिंग, विलेज टूर) का प्रशिक्षण दिया। साथ ही गांव की ब्रांडिंग 'ब्वारी विलेज' के तौर पर की, ताकि महिला सशक्तिकरण का संदेश दूर तक पहुंचे। इस बीच उन्होंने गांव में घस्यारी प्रतियोगिता के जरिए भी, पर्यटकों के लिए विलेज लाइफ की नई झलक प्रस्तुत की,जो पर्यटकों को खूब भा रही है। स्थानीय महिला अनीता पंवार बताती हैं कि गांव में अब अन्य महिलाएं भी अपनी छानियों को होम स्टे में परिवर्तित करने के लिए आगे आई हैं। प्रदीप पंवार बताते हैं कि अब उन्होंने अपने होम स्टे को पर्यटन विभाग में पंजीकृत करवा दिया है, जिससे वो ऑनलाइन बुकिंग भी ले सकते हैं। प्रदीप बताते हैं कि आठ मार्च 2022 से उन्होंने अपने होम स्टे की शुरुआत की थी, इसके बाद से यहां करीब एक हजार पर्यटक आ चुके हैं, जिससे करीब 20 महिलाओं को समय–समय पर काम मिलता है।

> "मथोली गांव, ग्रामीण पर्यटन के साथ ही महिला सशक्तिकरण का भी उदाहरण है। यदि गांव का कोई परिवार होम स्टे संचालन के लिए आगे आता है, तो उन्हें पर्यटन विभाग की सभी योजनाओं का लाभ दिया जाएगा। साथ ही पंजीकरण प्रक्रिया में भी सहयोग किया जाएगा। मथोली गांव से अन्य लोगों को भी प्रेरणा लेनी चाहिए।
>
> **पुष्कर सिंह धामी, मुख्यमंत्री**

5331 होम स्टे पंजीकृत हैं

पर्यटन विभाग के पास इस समय 5331 होम स्टे पंजीकृत हैं। जो ज्यादातर ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं द्वारा संचालित किए जा रहे हैं। सरकार पंडित दीन दयाल उपाध्याय होम स्टे योजना के तहत होम स्टे की लागत पर मैदानी क्षेत्र में 25 प्रतिशत और पहाड़ी क्षेत्र में 33 प्रतिशत तक सब्सिडी प्रदान करती है।

प्रस्तुति-प्रो.(डॉ.) के.एल.तलवाड़

पर्यावरण और जैव-विविधता के लिए खतरा बनती वनाग्नि

देवभूमि उत्तराखंड का लगभग 71 प्रतिशत भूभाग वनाच्छादित है। वन यहाँ निवास करने वाली आबादी की आर्थिकी और संस्कृति का प्रमुख आधार है। वन के साथ यहाँ निवास करने वाले लोगों के अन्योन्याश्रित संबंध है। हाल के वर्षों में जलवायु परिवर्तन और वैश्विक ताप वृद्धि के प्रभाव में वनाग्नि की घटनाओं में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। जंगल में लगने वाली आग मुख्यतः दो प्रकार की होती है पहली भूतल की आग जिसे ग्राउंड फायर कहते हैं और दूसरी ऊपरी छत्र की आग जिसे क्राउन फायर कहते हैं। जंगल में लगने वाली आग कुछ विशेष प्रकार के वनों का एक महत्वपूर्ण पारिस्थितिक घटक हैं। परन्तु जब यह आग अनियंत्रित और अन्य पारिस्थितिक तंत्र में पहुंचती हैं तो यह जैव–विविधता को हानि पहुंचाने के साथ–साथ खाद्य सुरक्षा के लिए संकट और पारिस्थितिक तंत्र में असंतुलन पैदा करती है। मानव–वन्यजीव संघर्ष और जलस्रोतों में कमी भी वनाग्नि के प्रमुख प्रभाव है। वनाग्नि से भारी पर्यावरणीय क्षति के साथ–साथ आर्थिक क्षति भी होती है।भारतीय वन सर्वेक्षण की रिपोर्ट के अनुसार नवंबर 2023 से जून 2024 तक देश में वनाग्नि की 2,03,544 घटनाएं हुई। इनमें से सर्वाधिक 21,033 घटनाएं उत्तराखंड में हुई जो पिछले वर्ष की तुलना में चार गुना थी। वर्ष 2025 अब तक वनाग्नि की दृष्टि से काफी अच्छा रहा है। 20 अप्रैल तक वर्ष 2023 में 243 और वर्ष 2024 में 429 वनाग्नि की घटनाएं हुई जबकि इस वर्ष इस अवधि में मात्र 70 घटनाएं हुई है।

देवभूमि के विकास का एक प्रमुख स्तंभ पर्यटन आधारित आर्थिकी है परन्तु वनाग्नि की घटनाएं पर्यटन उद्योग को बुरी तरह से प्रभावित कर रही है। वन विभाग और वैज्ञानिकों के सराहनीय प्रयास से इस वर्ष वनाग्नि को नियंत्रित करने में अब तक काफी सफलता मिली है। उत्तराखंड में वनाग्नि की घटनाएं मुख्यतः पर्वतीय क्षेत्रों में चीड़ (पिरुल) और मैदानी क्षेत्रों में साल की सूखी पत्तियों से होती है। आम तौर पर वनों का अग्निकाल 15 फरवरी से 15 जून (मानसून आने तक) होता है। उत्तराखंड में वनाग्नि का प्रमुख कारण वनों के आस–पास के कृषकों के द्वारा खेतों को साफ करने के लिए आड़ा–फुकान, वन क्षेत्रों के लोगों के द्वारा अच्छे पशु–धन की प्राप्ति के लिए आग लगाना और आपसी रंजिश के कारण लगाई जाने वाली आग है। वनाग्नि प्रबंधन के लिए नवीन तकनीक काफी लाभदायक सिद्ध हो रही है। कृत्रिम बुद्धिमता एवं उपग्रहों की मदद से वनाग्नि प्रबंधन प्रभावशाली ढंग से किया जा रहा है। मोडिस (MODIS) और एसएनपीपी (SNPP & VIIRS) उपग्रहों से वनाग्नि संबंधी सूचनाएँ आसानी से मिल जाती है। इन उपग्रहों से दिन में छः बार एलर्ट जारी किए जाते हैं जिससे वनाग्नि को शुरूआती समय में ही नियंत्रित कर लिया जाता है। विदेशों में उपयोग में लाई जा रही एआई तकनीक भी वनाग्नि प्रबंधन में लाभकारी हो सकती है। वनाग्नि के नियंत्रण में सामुदायिक भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण है। सामुदायिक भागीदारी को बढ़ाकर वनाग्नि को आसानी से नियंत्रित किया जा सकता है। कार्बन क्रेडिट और ग्रीन क्रेडिट के दौर में यदि इसका लाभ उस क्षेत्र के रहने वाले लोगों को मिले तो वहाँ की आबादी वन–संरक्षण के लिए प्रेरित होगी और वनाग्नि की घटनाओं को न्यूनतम स्तर तक लाया जा सकेगा।

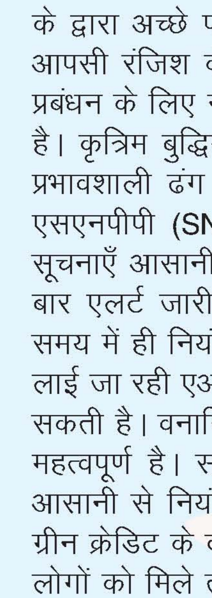

प्रस्तुति डॉ. इंद्रेश कुमार पाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर (वनस्पति विज्ञान),
डॉ. शिवानंद नौटियाल राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, कर्णप्रयाग (चमोली)

जैव विविधता

उत्तराखंड की पहली तितली गैलरी

देहरादून की धरती एक बार फिर प्रकृति और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में मिसाल बनकर उभरी है। उत्तराखंड वन विभाग द्वारा जोलीग्रांट स्थित नेचर एजुकेशन सेंटर में राज्य की पहली तितली गैलरी की स्थापना न केवल एक दृश्य सौंदर्य का केंद्र है, बल्कि यह जागरूकता, विज्ञान और जैव विविधता के प्रति सम्मान का सजीव उदाहरण भी है। यह गैलरी उन रंग–बिरंगी पंखों वाली नाजुक प्रजातियों की एक ऐसी झलक प्रस्तुत करती है, जो पारिस्थितिक तंत्र के संतुलन में अहम भूमिका निभाती हैं, परंतु अक्सर हमारी नजरों से ओझल रह जाती हैं।

प्रदर्शनी में उत्तराखंड की 500 में से 105 प्रमुख तितली प्रजातियों को चुना गया है, जो पाँच प्रमुख परिवारों पपिलियोनिडे, हेस्पेरिडे, लाइकेनिडे, नायम्पालिडे और पिएरिडे का प्रतिनिधित्व करती हैं। इनमें राज्य की तितली 'कॉमन पीकॉक', पत्तियों की भांति दिखाई देने वाली 'इंडियन ओकलीफ', ऊँचाई वाले क्षेत्रों में पाई जाने वाली 'इंडियन रेड एडमिरल', तथा 'कॉमन रोज' और 'ब्लैक स्पैंगल' जैसी दुर्लभ तितलियाँ शामिल हैं। इनकी हाई–रिजॉल्यूशन छवियाँ दर्शकों को न केवल चकित करती हैं, बल्कि उनके जीवन और पर्यावरण में भूमिका के प्रति एक नई समझ भी विकसित करती हैं। गैलरी का सबसे प्रेरणादायक पहलू मोनार्क तितली के प्रवास की कहानी है, जो लगभग 4,800 किलोमीटर की दूरी तय करती है वह भी एक नहीं, बल्कि कई पीढ़ियों में। यह प्रदर्शन न केवल जैविक चमत्कार का प्रमाण है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि छोटे से दिखने वाले जीवों में भी महान यात्राएं और संकल्प छिपे होते हैं।इस गैलरी में एक शैक्षिक खंड भी सम्मिलित है, जो उन पौधों को प्रदर्शित करता है जो तितलियों के जीवन चक्र के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। उदाहरणस्वरूप, कॉमन कास्टर तितली के लिए अरंडी का पौधा और लेमन तितली के लिए लैमिएसी परिवार के पौधे अपरिहार्य हैं। इससे छात्रों, शोधकर्ताओं और प्रकृति प्रेमियों को यह समझने में सहायता मिलेगी कि तितलियाँ केवल सौंदर्य नहीं, बल्कि परागण, प्रजनन और खाद्य श्रृंखला में महत्वपूर्ण कड़ियाँ हैं।गैलरी में संरक्षित नमूनों के साथ–साथ कवि रवींद्रनाथ टैगोर और रॉबर्ट फ्रॉस्ट की कविताएँ भी प्रदर्शित की गई हैं, जो विज्ञान और कला का संगम रचती हैं। यह पहल सराहनीय है, क्योंकि यह नयी पीढ़ी को न केवल तितलियों से जोड़ती है, बल्कि उन्हें काव्यात्मक भावनाओं और पर्यावरणीय उत्तरदायित्व के साथ जोड़ने का भी माध्यम बनती है।यह तितली गैलरी केवल एक स्थायी प्रदर्शनी नहीं, बल्कि एक संदेश है कि जैव विविधता का सम्मान और संरक्षण हमारे सांस्कृतिक और पर्यावरणीय उत्तरदायित्व का हिस्सा होना चाहिए। यह सुंदरता का उत्सव है, लेकिन साथ ही एक गंभीर चेतावनी भी है कि यदि हम इन नाजुक जीवों की सुरक्षा नहीं करेंगे, तो हमारी आने वाली पीढ़ियाँ केवल तस्वीरों और कविताओं में ही इन्हें देख पाएंगी।इस पहल के माध्यम से उत्तराखंड ने न केवल पर्यावरण शिक्षा में एक मील का पत्थर स्थापित किया है, बल्कि 'प्रकृति के रंगमंच' में अपनी भूमिका को भी सशक्त रूप से प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुति–अंकित तिवारी,
उप सम्पादक

सेवा, सद्भावना और संवेदना का संगम : माधव सेवा विश्राम सदन, ऋषिकेश

ऋषिकेश की पावन धरती, जहाँ योग, अध्यात्म और मानव सेवा की नित्य सजीव गाथा बहती है, वहीं अब एक और सेवा का दीप प्रज्वलित हुआ है। 'माधव सेवा विश्राम सदन' के रूप में। जहां गंगा की कलकल धारा योग और अध्यात्म का संदेश लेकर प्रवाहित होती है, वहीं उसी धरती पर 'माधव सेवा विश्राम सदन' सेवा, सद्भाव और सांस्कृतिक चेतना का एक भव्य प्रतीक बनकर उभरा है। भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा निर्मित यह भवन न केवल एक विश्राम स्थल है, बल्कि यह भारतीय जीवन मूल्यों, करुणा और सामाजिक उत्तरदायित्व का मूर्त रूप है। गंगा तट से मात्र 300 मीटर की दूरी पर स्थित यह भवन न केवल एक सुंदर स्थापत्य कृति है, अपितु यह भारतीय सेवा परंपरा का भी गौरवपूर्ण प्रतीक बनकर उभरा है।

3 जुलाई 2024 को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत द्वारा राष्ट्र को समर्पित यह भवन, भाऊ राव देवरस सेवा न्यास की कल्पना और प्रतिबद्धता का साकार रूप है। यह लोकार्पण महज एक औपचारिक उद्घाटन नहीं, बल्कि एक आदर्श सामाजिक दर्शन की उद्घोषणा भी थी, जो यह बताता है कि समाज के सबसे जरूरतमंद वर्ग के लिए समर्पण और सेवा ही सच्ची आध्यात्मिकता का मूल है।इस अद्वितीय सेवा केन्द्र का निर्माण पारंपरिक भारतीय स्थापत्य कला के अनुरूप किया गया है, जो इसकी गरिमा और आध्यात्मिकता को और अधिक प्रखर बनाता है।

सेवा का संवेदनशील विस्तार

पारंपरिक भारतीय स्थापत्य कला की छाया में निर्मित यह भवन अपने आप में एक स्थापत्य चमत्कार है। एम्स ऋषिकेश में उपचार हेतु आने वाले रोगियों, उनके परिजनों और सहायकों के लिए यह विश्राम सदन किसी वरदान से कम नहीं है। यहाँ 430 लोगों के ठहरने की सुविधा, 55 व 75 रुपये के सामूहिक कक्ष, तथा नाश्ता मात्र 20 रुपये व भोजन 35 रुपये में उपलब्ध कराकर सेवा को केवल भावना नहीं, व्यावहारिक रूप में साकार किया गया है। यह व्यवस्था सेवा को ही धर्म मानने वाले उस विचार को सामने लाती है, जिसमें "नर सेवा ही नारायण सेवा" का भाव समाहित है। पारंपरिक भारतीय स्थापत्य की झलक इस भवन की दीवारों से लेकर गलियारों तक दिखती है। लेकिन इसकी आत्मा इसकी सेवाओं में बसती है। योग साधना, सत्संग, बाल क्रीड़ा क्षेत्र, पुस्तकालय, टीवी लाउंज और सामुदायिक भोजन कक्ष ये सभी सुविधाएं इस भवन को केवल विश्राम स्थल नहीं, अपितु एक जीवंत सांस्कृतिक व मानवीय केन्द्र बनाती हैं।

केवल विश्राम नहीं यह एक 'संस्कार स्थल' है

माधव सेवा विश्राम सदन एक ऐसा स्थल है जो केवल भौतिक विश्राम की सुविधा नहीं देता, बल्कि मानसिक और आत्मिक विश्राम की भी व्यवस्था करता है। योग साधना, सत्संग, पुस्तकालय, टीवी लाउंज तथा बच्चों के खेलने की जगह,ये सभी सुविधाएं दर्शाती हैं कि यह भवन सेवा और संवेदना का जीवंत केंद्र है। सामूहिक भोजन की व्यवस्था जहां

सामुदायिक जीवन के संस्कार देती है, वहीं फिजियोथेरेपी की न्यूनतम दरों पर शुरुआत, चिकित्सा सेवा के प्रति इस संस्था की गंभीर प्रतिबद्धता को प्रकट करती है। भोजन कक्ष में 100 लोग एक साथ भोजन कर सकते हैं, यह सामाजिक सौहार्द का अद्‌भुत उदाहरण है। इस भवन की सबसे बड़ी विशेषता इसकी सोच है,यह उन लोगों के लिए निर्मित है जो एम्स ऋषिकेश जैसे बड़े चिकित्सालय में उपचार के लिए आते हैं, परन्तु आर्थिक, सामाजिक या भौगोलिक कारणों से ठहरने के लिए उपयुक्त स्थान नहीं पा पाते। लगभग 430 लोगों के एक साथ ठहरने की व्यवस्था, पैदल दूरी पर एम्स की उपलब्धता, और न्यूनतम दरों पर सुविधाएं, ये सभी इसे विशिष्ट बनाते हैं।

सुरक्षा और समावेशिता का उदाहरण

विश्राम सदन की वास्तुकला पारंपरिक भारतीय शैली को आत्मसात करती है, जो न केवल इसकी सुंदरता को बढ़ाती है, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक चेतना को भी प्रतिध्वनित करती है। माधव सेवा विश्राम सदन में केवल सुविधा ही नहीं, बल्कि सुरक्षा और समावेशिता पर भी विशेष ध्यान दिया गया है। जहां एक ओर इस भवन की आत्मा भारतीय परंपराओं से जुड़ी हुई है, वहीं दूसरी ओर इसका ढांचा आधुनिक सुविधाओं से लैस है। दिव्यांगों के लिए अलग से सुविधायुक्त शौचालय, अग्निशमन प्रणाली, जल संचयन की व्यवस्था और लिफ्ट जैसी सुविधाएं दर्शाती हैं कि यह सेवा केंद्र सभी वर्गों और जरूरतों को ध्यान में रखकर निर्मित किया गया है। यह एक ऐसा मॉडल प्रस्तुत करता है, जिसे देश भर में दोहराया जाना चाहिए।

प्रेरणा का स्रोत बनता एक सेवा धाम

आज जब समाज में स्वार्थ और सुविधा की होड़ है, ऐसे समय में माधव सेवा विश्राम सदन जैसे प्रकल्प एक नई आशा की किरण बनकर सामने आते हैं। यह भवन केवल ईंट और पत्थरों का ढांचा नहीं, बल्कि यह सेवा, सहयोग और सद्‌भावना की जीवंत प्रतिमा है। यह प्रकल्प न केवल ऋषिकेश की पहचान को वैश्विक मंच पर और भी उज्ज्वल करता है, बल्कि यह भावी पीढ़ियों को भी प्रेरित करता है कि सेवा ही जीवन का सर्वोच्च धर्म है। माधव सेवा विश्राम सदन, सचमुच में एक 'सेवा तीर्थ' है, जहाँ हर आगंतुक को केवल सुविधा ही नहीं, अपितु अपनापन और आत्मीयता का अनुभव होता है। भारत की सांस्कृतिक परंपरा में सेवा को परम धर्म माना गया है। माधव सेवा विश्राम सदन, ऋषिकेश में इस धर्म का अनुपालन अत्यंत श्रद्धा, समर्पण और संवेदनशीलता के साथ किया जा रहा है। यह भवन एक सामाजिक आंदोलन है, जो समाज को जोड़ने, सहारा देने और आत्मिक बल देने का कार्य कर रहा है। आज की भागदौड़ और तनावपूर्ण जीवनशैली में ऐसे सेवा केन्द्रों की आवश्यकता दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। ऐसे में माधव सेवा विश्राम सदन केवल रोगियों के लिए नहीं, बल्कि पूरे समाज के लिए एक प्रेरणा स्त्रोत है, एक ऐसा केन्द्र, जहाँ सेवा संस्कार बन जाती है, और सद्‌भावना उसका आधार। माधव सेवा विश्राम सदन एक ऐसा प्रकल्प है, जो न केवल वास्तुशिल्पीय सौंदर्य का उदाहरण है, बल्कि भारतीय जीवन दर्शन 'वसुधैव कुटुंबकम' का सजीव प्रतीक भी है। यह भवन आज नहीं, आने वाले कई वर्षों तक सेवा, सहानुभूति और समाज के प्रति उत्तरदायित्व का प्रेरणास्रोत बना रहेगा। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि ऋषिकेश की यह भूमि अब केवल योग की नगरी नहीं रही, बल्कि सेवा के नए सूरज का उदय भी यहीं हुआ है।यह अद्‌भुत प्रयास देशभर के सेवा संगठनों और सामाजिक संस्थानों के लिए एक मार्गदर्शक बनकर उभरा है। जब सेवा, वास्तु, तकनीक और संवेदना एक साथ मिलते हैं, तो 'माधव सेवा विश्राम सदन' जैसे उदाहरण सामने आते हैं,जो न केवल आज की जरूरतों का उत्तर हैं, बल्कि भविष्य की प्रेरणा भी हैं।

प्रस्तुति–अंकित तिवारी,
उप सम्पादक

ऐतिहासिक व धार्मिक नगरी कर्णप्रयाग में बढ़ता पर्यटन

कर्णप्रयाग उत्तराखंड राज्य के चमोली जनपद में स्थित एक प्रमुख नगर है, जो पंच प्रयागों (वह स्थान जहाँ अलकनंदा नदी की विभिन्न सहायक नदियाँ मिलती हैं) में से एक है। यह स्थान अलकनंदा और पिंडर नदियों के संगम पर स्थित है। कर्णप्रयाग का धार्मिक, ऐतिहासिक एवं पर्यटन की दृष्टि से विशेष महत्व है।

धार्मिक महत्व– कर्णप्रयाग का धार्मिक महत्व भारतीय संस्कृति और पुराणों में विशेष स्थान रखता है। यह स्थान महाभारत के महान योद्धा कर्ण से जुड़ा हुआ है, जिनके नाम पर इस प्रयाग का नामकरण हुआ है। ऐसा माना जाता है कि कर्ण ने यहीं अलकनंदा और पिंडर नदियों के संगम पर बैठकर सूर्य देव की तपस्या की थी और उनकी कृपा से उन्हें दिव्य कवच और कुंडल प्राप्त हुए थे। इस कारण यह स्थल कर्ण की तपस्या भूमि के रूप में विख्यात है और श्रद्धालु यहाँ आकर कर्ण की भक्ति और त्याग को स्मरण करते हैं। हिंदू धर्म में प्रयागों का विशेष महत्व होता है, क्योंकि इन्हें आत्मा की शुद्धि और मोक्ष की प्राप्ति के लिए अनुकूल माना जाता है। कर्णप्रयाग में अलकनंदा और पिंडर नदियों का संगम भी एक अत्यंत पवित्र स्थान माना जाता है, जहाँ स्नान करने से पापों का नाश और पुण्य की प्राप्ति होती है। संगम के तट पर बने मंदिरों में कर्ण मंदिर प्रमुख है, जहाँ भक्तजन पूजा–अर्चना करते हैं। इसके अलावा उमा देवी मंदिर, नृसिंह मंदिर और अन्य छोटे मंदिर भी धार्मिक गतिविधियों के केंद्र हैं। चारधाम यात्रा पर जाने वाले तीर्थयात्री कर्णप्रयाग होकर गुजरते हैं, जिससे यह स्थान एक धार्मिक पड़ाव के रूप में भी प्रसिद्ध है। पर्वतीय क्षेत्र में स्थित होने के कारण इसकी प्राकृतिक सुंदरता और आध्यात्मिक शांति भक्तों को आकर्षित करती है। कर्णप्रयाग की धार्मिकता केवल उसकी पौराणिक कथाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यहाँ की लोकआस्थाएँ और स्थानीय धार्मिक परंपराएँ भी इसे विशेष महत्व प्रदान करती हैं।

ऐतिहासिक महत्व–कर्णप्रयाग का ऐतिहासिक महत्व पौराणिक काल से लेकर आधुनिक समय तक फैला हुआ है। यह स्थल न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है, बल्कि ऐतिहासिक रूप से भी एक समृद्ध विरासत का परिचायक है। यह क्षेत्र महाभारत जैसे महान ग्रंथों में वर्णित घटनाओं का साक्षी रहा है, जो इसे ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण बनाता है। कर्णप्रयाग क्षेत्र प्राचीन काल में ऋषियों और मुनियों की तपस्थली के रूप में भी जाना जाता था। अनेक साधु–संतों ने यहाँ ध्यान और साधना की, जिससे यह स्थान एक आध्यात्मिक केंद्र के रूप में विकसित हुआ। इसके अतिरिक्त यह क्षेत्र कुमाऊँ और गढ़वाल के प्राचीन व्यापार मार्गों का भी हिस्सा रहा है, जहाँ से होकर व्यापारी तथा तीर्थयात्री विभिन्न स्थानों की यात्रा करते थे। इससे यह क्षेत्र सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से भी ऐतिहासिक रूप से समृद्ध रहा है। ब्रिटिश काल में कर्णप्रयाग एक प्रमुख स्थल के रूप में जाना गया, जब अंग्रेजों ने हिमालयी क्षेत्रों में खोज और अध्ययन के उद्देश्य से यहाँ यात्राएँ कीं। अनेक यात्री–वृत्तांतों में इस स्थान का वर्णन मिलता है, जिससे यह ज्ञात होता है कि कर्णप्रयाग न केवल स्थानीय बल्कि विदेशी इतिहासकारों और यात्रियों के लिए भी आकर्षण का केंद्र रहा है। इतिहास की दृष्टि से कर्णप्रयाग एक ऐसा स्थल है जहाँ पौराणिकता,

संस्कृति, आध्यात्मिकता और सामाजिक जीवन का संगम होता है। यह स्थान उत्तराखंड की ऐतिहासिक धरोहर का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसे संरक्षित और समझा जाना आवश्यक है। पर्यटन की दृष्टि से महत्व– कर्णप्रयाग पर्यटन की दृष्टि से उत्तराखंड का एक प्रमुख स्थल है, जहाँ प्राकृतिक सौंदर्य, धार्मिक महत्व और सांस्कृतिक समृद्धि का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। हिमालय की गोद में स्थित यह नगर अलकनंदा और पिंडर नदियों के संगम पर बसा है, जो इसे एक विशेष आकर्षण प्रदान करता है। संगम स्थल की सुंदरता और पवित्रता पर्यटकों को आत्मिक शांति और प्राकृतिक आनंद का अनुभव कराती है। यहाँ का शांत वातावरण, हरे–भरे पहाड़, कल–कल बहती नदियाँ और प्राचीन मंदिर पर्यटकों के लिए एक आदर्श गंतव्य बनाते हैं। प्राकृतिक प्रेमियों और फोटोग्राफी के शौकीनों के लिए कर्णप्रयाग अत्यंत उपयुक्त स्थान है। यहाँ से हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियों का दृश्य, सूर्यास्त और नदियों का संगम दर्शनीय होता है। पर्वतीय क्षेत्रों में ट्रेकिंग और साहसिक गतिविधियों के लिए भी यह क्षेत्र उपयुक्त है, विशेषकर उन पर्यटकों के लिए जो प्रकृति के बीच रोमांच की तलाश में रहते हैं। स्थानीय संस्कृति, पारंपरिक भोजन, और पहाड़ी जीवनशैली का अनुभव करना भी यहाँ आने वाले पर्यटकों के लिए एक विशेष अनुभव होता है। पर्व–त्योहारों के दौरान यहाँ की सांस्कृतिक झलक और लोक परंपराएँ पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। इस प्रकार कर्णप्रयाग न केवल एक धार्मिक स्थल है, बल्कि एक समृद्ध प्राकृतिक और सांस्कृतिक पर्यटन स्थल भी है, जो हर वर्ग के पर्यटकों को अपनी ओर खींचता है।

कर्णप्रयाग रेलवे स्टेशनः योजना और महत्व– कर्णप्रयाग रेलवे स्टेशन उत्तराखंड की ऋषिकेश–कर्णप्रयाग रेल परियोजना का एक प्रमुख हिस्सा है, जिसे टर्मिनल स्टेशन के रूप में विकसित किया जा रहा है। यह सेवई क्षेत्र में स्थित है, जो कर्णप्रयाग नगर के पास आता है। यह रेलवे परियोजना 125 किलोमीटर लंबी है और इसका अधिकांश हिस्सा यानी लगभग 105 किलोमीटर सुरंगों के माध्यम से जाएगा। सुरंग निर्माण का लगभग 90 प्रतिशत कार्य पूरा हो चुका है।

यह परियोजना धार्मिक, सामरिक और आर्थिक दृष्टि से अत्यंत उपयोगी मानी जा रही है। इससे ना केवल चारधाम यात्रा में सहूलियत होगी बल्कि सीमावर्ती इलाकों में सामरिक पहुंच भी सशक्त होगी। साथ ही यह कर्णप्रयाग और आसपास के क्षेत्रों के आर्थिक विकास, पर्यटन और रोजगार को भी बढ़ावा देगा। दिसंबर 2026 तक इस परियोजना के पहले चरण को पूरा करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

प्रस्तुति–
डॉ.मदन लाल शर्मा,
असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
कर्णप्रयाग।

टेबल टेनिस

दून विश्वविद्यालय ने जीती इंटर यूनिवर्सिटी चैंपियनशिप

इंटर यूनिवर्सिटी टेबल टेनिस चौंपियनशिप प्रतियोगिता का आयोजन डीबीएस ग्लोबल यूनिवर्सिटी देहरादून में हुआ। दून विश्वविद्यालय की टीम ने फाइनल मैच में डीएवी कालेज को 3–2 से हराकर चौंपियनशिप अपने नाम की। दून विश्वविद्यालय की टीम में पार्थ डंगवाल, अक्षित पोखरिया और सृष्टि काला सम्मिलित रहे। सृष्टि काला ने महिला सिंगल्स में तीसरा स्थान हासिल किया, जबकि अक्षित और पार्थ ने पुरुष डबल्स में दूसरा स्थान प्राप्त किया। दून विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर सुरेखा डंगवाल ने इस जीत को विशिष्ट उपलब्धि बताया और प्रतिभागियों को शुभकामनाएं दी। विजयी प्रतिभागियों को दस हजार रूपए का पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

चकराता (पुरोड़ी) में डॉ. बी.आर. अम्बेडकर की प्रतिमा स्थापित

उत्तराखंड का जनजातीय क्षेत्र जौनसार–बावर अपनी अनूठी संस्कृति, परंपराओं और सुंदरता के लिए जाना जाता है। 14 अप्रैल को अंबेडकर जयंती के अवसर पर इस क्षेत्र के चकराता (पुरोड़ी) में डॉ. भीमराव अंबेडकर की मूर्ति की स्थापना एक ऐतिहासिक घटना है, जो केवल एक प्रतिमा नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, समानता और संविधान की चेतना का प्रतीक है। यह मूर्ति हमें बाबासाहेब द्वारा दिए गए अधिकारों और जिम्मेदारियों की याद दिलाती है।डॉ. अम्बेडकर ने भारत को ऐसा संविधान दिया, जिसने सामाजिक ढांचे को नया रूप दिया। उन्होंने दलितों, आदिवासियों, महिलाओं और वंचित तबकों को वह अधिकार दिलाए, जो उन्हें सदियों से नहीं मिल पाए थे। उनका उद्देश्य था कि **'सबको समान अवसर और सम्मान मिले, भले ही वह किसी भी जाति, धर्म या वर्ग से हो।'** जौनसार–बावर जैसे क्षेत्र संविधान की 5वीं अनुसूची के अंतर्गत आने से विशेष लाभान्वित हुए। इस दर्जे से उन्हें न केवल अपनी संस्कृति को बनाए रखने का अधिकार मिला, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और संसाधनों में प्राथमिकता भी मिली। यह सब डॉ. अम्बेडकर के दूरदर्शी दृष्टिकोण की ही देन है।

इस क्षेत्र के लोगों ने धीरे–धीरे शिक्षा और सामाजिक जागरूकता को अपनाया है। डॉ. अम्बेडकर का मानना था कि "शिक्षा ही असली शक्ति है।" आज जौनसार–बावर के युवा और महिलाएं शिक्षित होकर न केवल आत्मनिर्भर बन रहे हैं, बल्कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन भी ला रहे हैं।डॉ. अम्बेडकर ने महिलाओं के अधिकारों के लिए भी बहुत संघर्ष किया। हिंदू कोड बिल के माध्यम से उन्होंने उन्हें संपत्ति, विवाह और तलाक के मामलों में समान अधिकार दिलाए। आज जौनसारी महिलाएं उनके संघर्ष की वजह से शिक्षा, नौकरी और नेतृत्व में अपना स्थान बना रही हैं।

प्रस्तुतिः
मनीष कुमार,
एम.ए. इतिहास, UGC NET, USET
कनिष्ठ लिपिक, राजकीय महाविद्यालय
चकराता, देहरादून

साईं सजृन पटल पत्रिका मार्च 2025 की भेंट

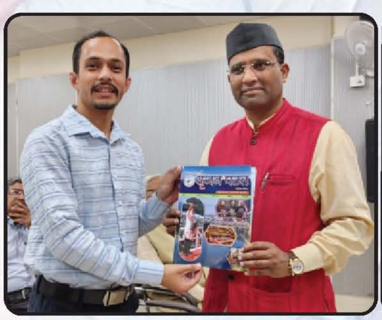

लोक गायक जागर सम्राट
पद्मश्री प्रीतम भरतवाण

मैती आंदोलन के प्रणेता
पद्मश्री कल्याण सिंह रावत

नगर निगम देहरादून के मेयर
मा.सौरभ थपलियाल

एम्स ऋषिकेश में ड्रोन सेवा के
नोडल अधिकारी डा.जितेंद्र गैरोला

इच्छाशक्ति

काजल सिंह : विश्व मंच पर योग से मिली पहचान

28 जून 1998 को योगनगरी ऋषिकेश में जन्मी काजल सिंह आज विश्व मंच पर योग की पहचान बन चुकी हैं। आधुनिकता की इस तेज रफ्तार दुनिया में जहाँ युवा अक्सर दिशा भ्रमित हो जाते हैं, वहीं 27 वर्षीय काजल सिंह एक नई राह चुनकर न केवल खुद को संवार रही हैं, बल्कि दूसरों के जीवन में भी सकारात्मक परिवर्तन का संचार कर रही हैं। पंडित ललित मोहन शर्मा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय से बी. ए. की शिक्षा पूरी करने के बाद काजल ने हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय से विधि की पढ़ाई की।वकालत के क्षेत्र में कदम रखते ही उन्हें यह अनुभव हुआ कि जीवन केवल न्याय की तलाश नहीं, आत्मसाधना और आत्मविकास की पुकार भी है। इस आत्मिक पुकार ने उन्हें योग की ओर मोड़ा। वकालत जैसे सम्मानित और चुनौतीपूर्ण क्षेत्र में कदम रखते हुए, उन्होंने जीवन की सच्ची राह योग में देखी। यही रुझान उन्हें ऋषिकेश में योग की ओर खींच लाया, जहाँ उन्होंने योग शिक्षक प्रशिक्षण कोर्स पूरा किया।

योग शिक्षा में पारंगत होने के बाद काजल ने कई केंद्रों में योग प्रशिक्षक के रूप में कार्य किया। निरंतर साधना, समर्पण और सेवा के माध्यम से उन्होंने न केवल देश में, बल्कि विदेशों में भी योग के महत्व को फैलाया। आज काजल मलेशिया में योग प्रशिक्षक के रूप में कार्यरत हैं, जहाँ वे भारतीय सांस्कृतिक परंपरा की यह अनमोल धरोहर,योग को विश्व समुदाय तक पहुँचा रही हैं।काजल कहती हैं, "योग मेरे लिए केवल शरीर को स्वस्थ रखने का माध्यम नहीं है, यह मेरे जीवन का दर्शन है। यह मुझे स्वयं से जोड़ता है, और वही जुड़ाव मुझे दुनिया से जोड़ता है। जब मैं विदेशों में भारतीय योग सिखाती हूं, तो वह केवल एक आसन नहीं होता, वह भारत की आत्मा का स्पंदन होता है।" काजल सिंह की यह यात्रा न केवल प्रेरणादायी है, बल्कि यह भी दर्शाती है कि जब कोई युवा अपने भीतर की शक्ति को पहचानता है और उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने का निश्चय करता है, तो वह सीमाओं को पार कर सकता है। योग के प्रति उनका समर्पण, अनुशासन और सेवा भावना आज के युवाओं के लिए एक उदाहरण है। ऋषिकेश की शांत गंगा तटों से निकलकर मलेशिया की धरती तक, काजल सिंह की यह यात्रा योग के शाश्वत संदेश 'वसुधैव कुटुम्बकम' की जीवंत मिसाल है। हमें गर्व है कि हमारी धरती की यह बेटी आज संपूर्ण विश्व को भारतीय ज्ञान परंपरा से जोड़ने का कार्य कर रही है। काजल की यात्रा हमें यह सिखाती है कि यदि संकल्प सच्चा हो और लक्ष्य स्पष्ट हो, तो व्यक्ति अपनी सीमाओं को लांघकर वैश्विक पहचान बना सकता है। उनके जीवन में परंपरा और आधुनिकता का संतुलन, साधना और शिक्षा का सामंजस्य, तथा आत्मविकास और सेवा का समर्पणकृइन सबका सुंदर समावेश दिखाई देता है।आज की युवा पीढ़ी के लिए काजल सिंह एक प्रेरणा हैं, यह संदेश देती हुई कि अपने मूल से जुड़कर भी हम दुनिया को जीत सकते हैं। उनके भीतर की साध्वी और बाहर की प्रशिक्षक, दोनों मिलकर यह प्रमाणित करती हैं कि भारत की सांस्कृतिक धरोहर आज भी प्रासंगिक है, प्रभावशाली है, और वैश्विक मंच पर सम्मानित हो सकती है।

प्रस्तुति-अंकित तिवारी,
उप सम्पादक

लेखक गांव में संगोष्ठी

भारतीय भाषाओं की स्मृति और समृद्धि

गुजरात के प्रसिद्ध कवि, लेखक और गुजरात साहित्य अकादमी के अध्यक्ष एवं सेवानिवृत्त आईएएस डॉ. भाग्येश झा अपने दो दिवसीय उत्तराखंड प्रवास पर 'भारतीय भाषाओं की स्मृति और समृद्धि' विषयक संगोष्ठी में भाग लेने लेखक गांव (थानों–देहरादून) पहुंचे। लेखक गांव एवं गुजरात साहित्य अकादमी निकट भविष्य में भारतीय भाषाओं की समृद्धि और अंतर्संबंधों को लेकर संयुक्त रूप से लेखक गांव में कार्यशालाएं,सम्मेलन एवं अनुवाद शिविर सहित अनेक प्रकार की गतिविधियां आयोजित करेंगे। डॉ. भाग्येश झा ने अपने संबोधन में कहा कि लेखक गांव की स्थापना एक विलक्षण कल्पना है। भविष्य में गुजरात साहित्य अकादमी और लेखक गांव मिलकर भारतीय भाषाओं के संरक्षण, प्रचार–प्रसार और समृद्धि के लिए मिलकर कार्य करेंगे। वर्तमान समय में हम इंटरनेट आधारित ज्ञान को ही अध्ययन का प्रमुख स्रोत मान रहे हैं, जबकि भारत के पारंपरिक ज्ञान–विज्ञान वेद, पुराण, शास्त्र आदि में संपूर्ण एवं प्रामाणिक ज्ञान का भंडार रहा है। अब आवश्यकता है कि इस पारंपरिक ज्ञान को नवाचार के रूप में लेखक गांव की धरती से पूरे देशवासियों तक पहुँचाया जाए और इसे वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठित किया जाए।

कुछ दिन पहले पूर्व मुख्यमंत्री एवं पूर्व केंद्रीय शिक्षा मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक गुजरात के दौरे पर थे, जहाँ गुजरात साहित्य अकादमी के एक कार्यक्रम में उन्होंने लेखक गांव

की परिकल्पना का उल्लेख किया। इसी कार्यक्रम में गुजरात के मुख्यमंत्री ने लेखक गांव आने की उत्सुकता व्यक्त की थी। उसी क्रम में गुजरात साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ.भाग्येश झा और महासचिव डॉ.जयेंद्र यादव लेखक गांव के भ्रमण पर आए। गुजरात साहित्य अकादमी के सचिव डॉ.जयेंद्र जाधव ने बताया कि गुजरात साहित्य अकादमी के अंदर छह अकादमियां हिन्दी, गुजराती, संस्कृत, सिंधी, कुछ एवं उर्दू अकादमी निहित हैं। अकादमियों के माध्यम से लेखक गांव के साथ मिलकर लेखन अनुवाद भाषा शिक्षण तथा प्रतियोगी कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

डॉ.निशंक ने कहा कि उत्तराखंड वेद, पुराण और उपनिषदों की जन्मस्थली रही है, यह आयुर्वेद की धरती है, उत्तराखंड भारत ही नहीं अपितु विश्व का भी प्राणवायु सृजनकर्ता है। यह विश्व की अध्यात्म की धरोहर है। हिमालय की गोद में बसा लेखक गाँव एक ऐसा केंद्र बन रहा है जो साहित्य सृजन का स्थल ही नहीं, बल्कि भावी पीढ़ी के रचनाकारों के निर्माण का केंद्र भी बनेगा।उन्होंने बताया कि लेखक गांव नालंदा पुस्तकालय एवं शोध केंद्र के प्रथम चरण में 10 लाख पुस्तकों के संकलन का लक्ष्य निर्धारित है, जिसमें अब तक 60,000 से अधिक पुस्तकें संकलित की जा चुकी हैं। यह पुस्तकालय शोधकर्ताओं एवं छात्र–छात्राओं के लिए एक मील का पत्थर साबित होगा। पद्मश्री प्रीतम भरतवान ने लेखक गांव को उत्तराखंड की एक अमूल्य सांस्कृतिक पूंजी बताया।

इस अवसर पर पद्मश्री डॉ.बी.के.एस. संजय, पद्मश्री डॉ. योगी एरोन, पद्मश्री श्रीमती माधुरी बर्थवाल, पद्मश्री कल्याण सिंह रावत 'मैती', सेवानिवृत्त प्रशासनिक अधिकारी चंद्र प्रकाश त्रिपाठी, स्पर्श हिमालय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. काशीनाथ जेना, पूर्व उच्च शिक्षा निदेशक प्रो. सविता मोहन, लेखिका शोभा त्रिपाठी, कुसुम रावत एवं नीरजा कुकरेती सहित देशभर से कई वरिष्ठ साहित्यकार एवं लेखक उपस्थित रहे। कार्यक्रम से पूर्व अतिथियों द्वारा भारत रत्न अटल बिहारी बाजपेयी की मूर्ति पर माल्यार्पण और लेखक गांव परिसर में रुद्राक्ष वृक्ष का रोपण भी किया गया। संगोष्ठी में डॉ.भाग्येश झा को 'लेखक गांव सृजन सम्मान' से सम्मानित किया गया।

प्रस्तुति–
प्रो. (डा.) के.एल. तलवाड़

उपलब्धि

डीएवी कॉलेज देहरादून के छात्र-छात्राओं ने राष्ट्रीय स्तर पर लहराया परचम

4 और 5 अप्रैल को सरदार भगवान सिंह विश्वविद्यालय बालावाला द्वारा आयोजित सरदार गुरचरण सिंह स्मृति 16वीं राष्ट्रीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में देशभर के शीर्ष विश्वविद्यालयों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में दिल्ली विश्वविद्यालय, भोपाल विश्वविद्यालय, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, लवली प्रोफेशनल विश्वविद्यालय, गोबिंद वल्लभ पंत विश्वविद्यालय जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों सहित 150 से अधिक प्रतिभागियों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इस राष्ट्रीय मंच पर डी.ए.वी. (पी.जी.) कॉलेज, देहरादून की ओर से चार प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं महक भंडारी, शिवानी थपलियाल, अनन्या कुमार और प्रियांशु बलूनी ने प्रतियोगिता में भाग लिया और चौंपियंस ट्रॉफी जीतकर पूरे कॉलेज का मान बढ़ाया। इस सफलता ने कॉलेज को राष्ट्रीय स्तर पर एक नई ऊंचाई प्रदान की। हिंदी खंड में महक भंडारी ने प्रथम स्थान और शिवानी थपलियाल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस शानदार उपलब्धि के उपलक्ष्य में 7 अप्रैल को कॉलेज के प्रबंधन मंडल द्वारा एक भव्य सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कॉलेज परिसर में उत्सव जैसा माहौल रहा और हर कोने में छात्रों की इस ऐतिहासिक जीत की चर्चा थी।

समारोह की अध्यक्षता प्राचार्य प्रो. एस.के. सिंह ने की तथा उप-प्राचार्य प्रो. एस.पी. जोशी सहित सभी वरिष्ठ प्राध्यापकगण, शिक्षाकर्मी और छात्र-छात्राएं इस अवसर पर उपस्थित रहे।

प्रस्तुति:
अमन तलवाड़
सह सम्पादक

थियेटर वर्कशॉप

दून विश्वविद्यालय में रंगमंच कार्यशाला का आयोजन

दून विश्वविद्यालय के रंग मंच विभाग और डीबीएस कालेज के संयुक्त तत्वावधान में रंगमंच कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में छात्र-छात्राओं को रंगमंच की बारीकियों और गतिविधियों की विस्तृत जानकारी दी गई। कार्यशाला में लोकनृत्य के अंतर्गत 'तांदी' से भी परिचित करवाया गया। कार्यशाला में पचास से अधिक छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और रंगमंच से जुड़ी तमाम जानकारियों को समझा। दून विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर सुरेखा डंगवाल ने कहा कि यह थियेटर वर्कशॉप विद्यार्थियों को न केवल रंगमंच की कला से परिचित करा रही है बल्कि उन्हें टीम वर्क, अनुशासन और नेतृत्व जैसे जीवन मूल्यों की शिक्षा भी दे रही है। रंगमंच मंच विभाग के संयोजक प्रो.एच.सी. पुरोहित ने बताया कि रंगमंच एक सहयोगात्मक कला का रूप है जो अर्थ व्यक्त करने के लिए शब्दों,आवाज, गति और दृश्य तत्वों को जोड़ता है। रंगमंच के क्षेत्र में न केवल सजीव तात्कालिक और पटकथा आधारित कार्य शामिल हैं बल्कि फिल्म, टेलीविजन और अन्य इलेक्ट्रॉनिक मीडिया जैसे नाटकीय रूप भी शामिल हैं।

डीबीएस कालेज के प्राचार्य प्रो.अनिल पाल ने कहा कि दून विश्वविद्यालय में आयोजित इस कार्यशाला से उनके विद्यार्थियों को सीखने के लिए एक शानदार मंच मिला है।